शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-२

माह : अगस्त २०२०

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-२

माह- अगस्त २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन

प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

सुश्री ज्योति कुमारी

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफजाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह,दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन
शिक्षण
संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि बेसिक शिक्षा विभाग के कर्मठ और समर्पित शिक्षक स्वैच्छिक रूप से बेसिक शिक्षा के उन्नयन के लिए ''मिशन शिक्षण संवाद'' नाम के शैक्षिक संगठन के माध्यम से बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु सतत प्रयास कर रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शिक्षकों, छात्रों एवं शैक्षिक गतिविधियों में रुचि रखने वालों की दृष्टि से अत्यन्त ही उपयोगी मासिक पत्रिका का भी संपादन किया जाता है। मुझे प्रसन्नता है कि इतनी उपयोगी पत्रिका के प्रस्तुत अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामना संदेश के बहाने मुझे भी मिशन शिक्षण संवाद परिवार से संवाद स्थापित करने का सुअवसर मिला है।

मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का यह सकारात्मक प्रयास निश्चित ही प्रशंसनीय एवं वंदनीय है। शिक्षा और शिक्षक राष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण आधार हैं। बेसिक शिक्षा जगत में मिशन शिक्षण संवाद ने विभिन्न मंचों और स्तंभों के माध्यम से जिस प्रकार के सकारात्मक शैक्षिक कार्यों का संग्रह कर एक नवीन सोच को दिशा दी है यह सोच अवश्य ही बेसिक शिक्षा को समयानुकूल परिवर्तन की ओर ले जाने में सफल होगी। मिशन शिक्षण संवाद की ई–पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित सभी स्तंभ अत्यन्त रुचिकर और महत्वपूर्ण हैं तथा Beyond the books शिक्षक और छात्र दोनों की सोच को प्रस्तुत करते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मिशन शिक्षण संवाद को मेरी ओर से बहुत–बहुत शुभकामनाएँ प्रेषित हैं। मुझे विश्वास है कि राष्ट्र की नई पीढ़ी के शैक्षिक और चारित्रिक उन्नयन में मिशन शिक्षण संवाद के प्रयासों को सफलता मिलेगी।

सादर

बच्चू सिंह,
पी.सी.एस.,
अपर जिलाधिकारी,
कानून व्यवस्था/प्रोटोकॉल,
वाराणसी।

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

सम्पादकीय

शिक्षा वही उपयोगी है जिसे व्यवहार में लाया जा सके। यदि शिक्षा व्यावहारिक नहीं है तो अलाभकारी साबित होती है। मसलन एकता का पाठ पढ़ा दिया जाए, प्रश्नोत्तर करा दिए जाएँ। परंतु विद्यार्थियों में एकता की भावना ही विकसित न हो तो ऐसी रटन्त का क्या लाभ? शिक्षकों को उस स्तर तक जाना होगा। जो किताबी शिक्षा को व्यावहारिक शिक्षा में तब्दील कर सके।

विद्यार्थियों में परिवर्तन लाने से पूर्व शिक्षकों को स्वयं में परिवर्तन लाना होगा। वो शिक्षक होने को एक नौकरी न समझकर राष्ट्र निर्माण का दायित्व समझेंगे तब परिदृश्य ही बदल जाएगा। मिशन शिक्षण संवाद एक ऐसी ही पहल है जो शिक्षण में आने वाली बाधाओं का सामना रचनात्मक तरीके से करने में सक्षम है। अनमोल रत्न की सच्ची कहानियाँ बताती हैं कि कैसे विपरीत परिस्थितियों से जूझा जा सकता है तो नवाचार और गतिविधियाँ शिक्षण में ऊर्जा का स्रोत बनी हुई हैं। इस महामारी के दौर में भी ऐसे रचनात्मक प्रयास कम होने के बजाय बढ़े ही हैं।

शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका नित नए मुकाम हासिल किए जा रही है। परंतु हमें इसकी पाठक संख्या को लगातार विस्तृत करना है जो आप सभी के सहयोग से संभव है। अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ पत्रिका का अगस्त अंक आप सभी को समर्पित है।

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–12
भारत में विज्ञान की वर्तमान स्थिति और संभावनाएं	13–15
मिशन गीत	16
निन्दक नियरे राखिए	17–19
टी.एल.एम.संसार	20
शिक्षण गतिविधि	21
नवाचार	22
इंग्लिश मीडियम डायरी	23
प्रेरक–प्रसंग	24
सद्विचार	25–26
ममतामयी माँ मदर टेरेसा	27–28
बाल साहित्य	29
बच्चों का कोना	30–32
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	33
बात शिक्षिकाओं की	34
योग विशेष	35
खेल विशेष	36
मिशन हलचल	37–38

विचारशक्ति–1

'नई शिक्षा नीति दूरदर्शिता व दृढ़ संकल्प आधारित'

भारत देश के लाखों छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों, जनप्रतिनिधियों व लगभग एक लाख पच्चीस हजार ग्राम समितियों से विचार–विमर्श के उपरांत नई शिक्षा नीति तैयार की गयी। इस नीति को शैक्षिक सत्र 2021–22 में लागू किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति 5+3+3+4 के प्रारूप पर तैयार की गयी है। जिसमें आर.टी.ई. के दायरे को बढ़ाकर 3 से 18 आयु वर्ग के छात्रों को शामिल किया गया है।

1. पहले,5 वर्ष को फाउंडेशन स्टेज माना गया है। इसमें 3 साल प्री– प्राइमरी व शेष 2 साल कक्षा 1 व 2 के लिये है। इसमें बच्चों की मजबूत नींव तैयार की जाएगी। शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा व राष्ट्रभाषा में दी जाएगी। अंग्रेजी में पढ़ाई की अनिवार्यता खत्म होगी। अंग्रेजी मात्र एक विषय के रूप मे पढ़ायी जाएगी। इस स्टेज को 3 से 8 आयु वर्ग के बच्चों के लिये तैयार किया गया है। यह पूर्णरूप से 'खेलो, कूदो और पढ़ो' के सिद्धान्त पर आधारित है।

2. इसके बाद के 3 साल में कक्षा 3 से 5 के बच्चों का भविष्य तैयार किया जाएगा। इसमें 8 से 11 वर्ष के बच्चों का परिचय विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विषय जैसे विषयों से कराया जाएगा।

3. अगले 3 साल कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिये है जिसे मिडिल स्टेज कहा गया है। इसमें 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को निर्धारित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा। छात्रों को कंप्यूटर कोडिंग का मौका मिलेगा। उन्हें कम उम्र में ही सॉफ्टवेयर व मोबाइल फोन ऐप्लिकेशन बनाने के अवसर प्राप्त होगे। किसी विषय में विशेष रुचि होने पर प्रैक्टिकल ट्रेनिंग की व्यवस्था भी उपलब्ध करायी जायेगी।

4. इसके अगले 4 वर्ष लास्ट स्टेज होगी जिसमें कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा की व्यवस्था है। इसमें 14 से 18 आयु वर्ग के बच्चे सम्मिलित है। इस स्टेज में रटंत विद्या का अन्त करते हुए, बच्चों में विषयों की समझ को विकसित किया जाएगा। उन्हें जीवन के बड़े लक्ष्यों का निर्धारण करने योग्य बनाया जाएगा। स्ट्रीम सिस्टम पूरी तरह से समाप्त होगा। अब आर्ट्स का छात्र भौतिक विज्ञान तथा कामर्स का इतिहास और समाजशास्त्र पढ़ सकेगा। विभिन्न विषयों के कई पूल तैयार किये जाएँगे और छात्र उनमें सम्मिलित विषयों का चयन स्वेच्छा से कर सकेंगे।

परीक्षाएँ सेमेस्टर सिस्टम से होंगी। एक साल मे दो सेमेस्टर होंगे और दोनों की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के आधार पर रिजल्ट तैयार होंगे। रिपोर्ट कार्ड 360 डिग्री असेसमेंट आधारित होंगे जिसमें छात्र खुद का विश्लेषण करेंगे, सहपाठी व शिक्षक अंक देगे। रिजल्ट तैयार करते समय बच्चों की समझ पाठ्य सहगामी क्रियाओं व वर्ष भर के कार्यों का मूल्यांकन भी शामिल होगा।

उच्च शिक्षा में एडमिशन के लिए कॉमन एप्टिट्यूड टेस्ट की व्यवस्था की गई है। अब छात्र

यदि 12वीं कक्षा में कम अंक पाते हैं तो उन्हें कैट परीक्षा देने का अवसर प्राप्त होगा। फिर 12वीं के नंबर और कैट परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर मेरिट का निर्धारण करते हुए उनको उच्च शिक्षा में प्रवेश के अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

ग्रेजुएशन की पढ़ाई को अब तीन और 4 वर्षों में बाँट दिया गया है। पहले, यदि आप पढ़ाई बीच में छोड़ देते थे तो आपको डिग्री नहीं मिल पाती थी पर अब ऐसा नहीं है। अब इस व्यवस्था को 'मल्टी इंट्री व मल्टी एग्जिट' वाली बना दिया गया है। छात्र अपनी मर्जी से विषय चुन सकेंगे वह जब चाहे पढ़ाई बीच में छोड़ सकते हैं। 1 साल की पढ़ाई पर सर्टिफिकेट, 2 साल की पढ़ाई पूरी करने पर डिप्लोमा, 3 वर्ष की पढ़ाई पूरी करने पर बैचलर डिग्री तथा 4 वर्ष की पढ़ाई पूरी करने पर रिसर्च के सर्टिफिकेट के साथ डिग्री प्रदान की जाएगी।

अब एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट बनाया जाएगा। इसके तहत अब छात्र एक साथ एक से ज्यादा कोर्स करना चाहे तो कर सकेंगे। जिस कोर्स को जहाँ तक करेंगे उसके क्रेडिट इस क्रेडिट बैंक में जमा हो जाएँगे। जब छात्र फाइनल डिग्री के लिए कोर्स करेंगे तो उस क्रेडिट को इसमें जोड़ दिया जाएगा। यह व्यवस्था पूरी तरह से डिजिटल व ऑनलाइन होगी।

नई शिक्षा नीति में भारतीय उच्च शिक्षा आयोग बनाया जाएगा। इसके तहत चार स्वतंत्र संस्थाएँ होंगी। जोकि राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद, सामान्य शिक्षा परिषद, उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद, राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद होंगे। जिनका कार्य क्रमशः नियमन करना, मानकों का निर्धारण, वित्त पोषण व मान्यता देना होगा। भारतीय उच्च शिक्षा आयोग अदृश्य संस्था होगी जो टेक्नोलॉजी के जरिये हस्तक्षेप करेगी।

देश में 34 वर्ष बाद आयी नई शिक्षा नीति पूर्णतः दूरदर्शिता व दृढ़ संकल्प पर आधारित है। यह छात्रों पर अनावश्यक दबाव को कम करेगी तथा उनकी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करने के अवसर देकर उन्हे स्वावलम्बी बनायेगी तथा सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी। सबसे बड़ी चुनौती शिक्षकों के लिये है कि वे शिक्षण विधियों, नवाचार व आई.सी.टी. का प्रयोग करते हुये नई शिक्षा नीति की चुनौतियों को स्वीकार करें तथा देश के नौनिहालों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

अभिषेक शुक्ला,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय लदपुरा,
विकास खण्ड–अमरिया,
जनपद–पीलीभीत।

विचारशक्ति–2

अशिक्षा उन्मूलन के द्वारा प्रगतिशील समाज की राह दुरुस्त

अशिक्षा उन्मूलन का अर्थ शिक्षा प्राप्ति के राह में आने वाले सभी अवरोधों को हटाना और शिक्षा प्राप्ति की राह प्रशस्त करना।

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शिक्ष् धातु से होती है जिसका अर्थ होता है सीखना। मनुष्य जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है।

यदि इसके अंग्रेजी शब्द एजुकेशन को देखते है तो यह लैटिन भाषा के एडुसीयर शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है अंदर से बाहर निकालना।

मतलब शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अंदर के ज्ञान को बाहर निकालने का कार्य करती है।

अशिक्षा उन्मूलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

शिक्षा का प्रभाव मानव जीवन में प्रारम्भ से रहा है। वैदिक काल में शिक्षा पर गुरुकुल पद्धति का प्रभाव देखने को मिलता था। भारद्वाज, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, घोषा, लोपामुद्रा, सिकता, कक्षावरि आदि कई विद्वान व विदुषी हुए जिनका प्रभाव शिक्षा पर देखने को मिलता है। हालाँकि असमानताएँ भी काफी देखने को मिलती थीं और शिक्षा की पहुँच जनसाधारण तक नहीं थी।

आधुनिक भारत के इतिहास में अंग्रेजों के आगमन से शिक्षा के क्षेत्र में अप्रत्याशित रूप से प्रगति देखने को मिली।

1781 में वारेन हेस्टिंग्स द्वारा कलकत्ता मदरसा की स्थापना करना, 1791 में संस्कृत कॉलेज की स्थापना, सन् 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, 1813 के चार्टर एक्ट में एक लाख रूपये की स्वीकृति से शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

भले अंग्रेजों का उद्देश्य एक सशक्त लिपिक वर्ग तैयार करना ही था पर उससे भारतीयों को आधुनिक शिक्षा से परिचित होने का अवसर मिला। इसके बाद सैंडलर आयोग, वुड डिस्पैच, हंटर शिक्षा आयोग आदि ने शिक्षा में एक क्रांति सा काम किया। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन सबके बावजूद भी समाज की अंतिम पंक्ति तक शिक्षा नही पहुँच पा रही है।

अशिक्षा उन्मूलन की आवश्यकताः–

मानव एक सभ्य प्राणी है जिसे अपने जीवन को सही तरीके से जीने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों को जानने की आवश्यकता है जो शिक्षा के बिना संभव नही हैं।

01. लैंगिक असंवेदनशीलताः– आमतौर पर देखा जाता है कि भारत जैसे देश में लिंग भेद बहुत अधिक देखा गया है। लड़कों को उच्च शिक्षा देना और लड़कियों को इससे वंचित रखने की प्रवृत्ति को बदलने की आवश्यकता है।

02. असमानता की खाई को पाटना:– आज हम देखते है की अमीर और गरीब वर्ग की खाई सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है। अमीर वर्ग और अमीर और गरीब वर्ग और गरीब होता जा रहा है। इस खाई को अशिक्षा उन्मूलन के बिना नहीं पाटा जा सकता।

03. अपराधों की रोकथाम के लिए आवश्यक:– आये दिन हम देखते हैं कि जघन्य अपराध करने वालो की संख्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है।

बलात्कार, चोरी, डकैती, लूट–खसोट, जालसाजी, हत्या जैसी घटनाएँ अशिक्षा की ही देन हैं क्योंकि शिक्षित और सभ्य व्यक्ति इन सब से कोसों दूर रहता है यह बात प्रमाणित भी हो चुकी है।

04. वैश्विक स्तर पर भारत के विकास के लिए:–आज का युग वैश्वीकरण का युग है। इस समय हमें ग्लोबल समस्या के लिए विश्व स्तर पर अपनी माँगों व सुझाव को प्रबल रूप से रखने वाले प्रतिनिधि की आवश्यकता रहती है। तभी हम विश्व पटल पर अपनी महती भूमिका निभा सकेंगे।

05. ऑनर किलिंग जैसी घटनाओं को अंजाम देना भी शिक्षा की कमी के कारण ही देखने को मिलती है। उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति उच्च स्तरीय सोच रखते हैं जिस कारण वे ऐसी घटनाओं को अंजाम नहीं देते है।

06. जातिगत भेदभाव को हटाने में जरुरी:– प्राचीन भारतीय इतिहास में जातिगत भेदभाव से प्रभावित होकर समाज को दूषित करने वाली अवांछित घटनाएँ देखने को मिलती थीं.....जैसे–जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ा तो इन घटनाओं में कमी आई और लोग अपने अधिकारों से परिचित हुए। इस भेदभाव को समूल नष्ट करने के लिए शिक्षा की व्यापकता को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

अशिक्षा उन्मूलन के लिए प्रयास:– अशिक्षा उन्मूलन के लिए केंद्र व राज्य दोनों सरकार द्वारा प्रयास किये जा रहे है। अधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देना भी इसका एक हिस्सा है। इसके साथ सरकार को ऐसी योजनाएँ निकालनी चाहिए जिससे जो व्यक्ति औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में किसी कारणवश असमर्थ हो उसे अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा सुलभ तरीके से प्राप्त हो सके।

01. व्यापक साक्षरता अभियान:– शिक्षा की पहुँच को बढ़ाने के लिए व्यापक साक्षरता अभियान के द्वारा अधिक से अधिक व्यक्तियो को साक्षर करना।

02. प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देना:– प्रौढ़ शिक्षा अभियान के द्वारा उन अधिक उम्र वाले व्यक्तियों को शिक्षा देना जिन्होंने किसी कारणवश या जिम्मेदारियों के कारण बचपन में पढ़ाई का बलिदान दे दिया था।

03. शिक्षा को माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क करना:– शिक्षा ऐसा हथियार है जो हमारे समाज और देश की प्रगति को सुरक्षित करता है, यदि कोई व्यक्ति निर्धनता की वजह से इससे वंचित रह जाता है तो यह देश के लिए दुर्भाग्य की बात होगी। इसलिए इसे माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क कर देना चाहिए।

04. गैर शैक्षणिक कार्यो के लिए अलग से भर्ती:– शिक्षा के कार्यों में गैर शैक्षणिक कार्य बाधा बनते हैं ऐसे में शिक्षक पूरी शिद्दत से बच्चों को पढ़ा नहीं पाते हैं। ऐसे में गैर शैक्षणिक कार्यों के लिए अलग से भर्ती की जानी चाहिए जिससे बेरोजगारों को रोजगार भी मिले और शैक्षिक कार्य में बाधा भी न आये।

05. दुर्गम स्थलों तक शिक्षा पहुँचाने के प्रबंध करना:– भारत भौगोलिक विविधताओं से बाहर देश है जिसमे मरुस्थल से लेकर पहाड़ी क्षेत्रों में लोग बसे हुए हैं। ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा के प्रबंध करना चाहिए जिससे सभी को समान शिक्षा के अवसर मिल सके।

06. शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग:– शिक्षा को रोचक बनाने के लिए नवाचारों का प्रयोग करना चाहिए। इससे शिक्षा रोचक भी बनेगी और छात्रो का रुझान शिक्षा की ओर बढ़ेगा।

अशिक्षा उन्मूलन का प्रभाव:–

इन सभी प्रयासों से अशिक्षा का उन्मूलन किया जा सकता है। जिससे निश्चित तौर पर देश और समाज की प्रगति के रास्ते दुरुस्त होंगे और देश की नवपीढ़ियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान होंगे वे अपने अधिकारो से परिचित होंगे साथ ही सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान होंगे।

गौरव सिंह घाणेराव
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोरडू,
तहसील:–सुमेरपुर,
जनपद–पाली,
राजस्थान।

“Ask not what your country can do for you.
Ask what you can do for your country.”
- Jawaharlal Nehru

विचारशक्ति–3

कभी–कभी मैं एक अजीब सी उलझन में पड़ जाती हूँ, समझ नही आता कि मैं इन्हें पढ़ाती हूँ या ये मुझे पढ़ाते हैं क्योंकि मैं रोज पढ़ती हूँ इनके मन के भावों को,समझती हूँ इनके मन को और पाती हूँ असीम प्रेम अपने प्रति। इनकी आँखों में रोज पढ़ती हूँ, प्रेम की परिभाषा। वो निःस्वार्थ आदर, प्रेम जो झलकता है, उनके लाये बेरों में, कच्चे आम और खजूर में। जो वो मेरे लिए लाते हैं, अपनी फटी जेबों में। मैं पढ़ती हूँ, इनकी आँखों में जीवन के प्रति ललक। अभावों में भी सम्पूर्णता।

मैं सीखती हूँ। ...इनसे जीवन के लिए संघर्ष करना। किस तरह से ये बच्चे रोज कठिनाइयों से जूझते, मुसीबतों से लड़ते, मीलों पैदल चलकर रोज स्कूल आते हैं। मुझे रोज एक सबक दे जाते हैं। देखती हूँ तो सोचती हूँ कि क्या पढ़ाऊँ! इन्हें तो जिंदगी रोज नया सबक सिखाती है, रोज इनका इम्तिहान लेती है।

ये सिखाते हैं मुझे जीवन दर्शन, जीने का एक जीवंत तरीका। इनकी आँखों में देखी है मैंने एक जीवन्तता। जो शायद किसी किताब में कभी नही पढ़ी, किसी महात्मा के सत्संग में नही सुनी।

किसी की माँ नही, तो किसी के पिता नहीं। किसी को माँ ने मंदिर में छोड़ा। किसी के पास कपड़े नही तो किसी के पास कॉपी नही। क्या ईश्वर इतना क्रूर भी हो सकते हैं? लेकिन मैंने सीखा इनसे, हर हाल खुश रहना। कभी शिकायत ना करना।

सोचती हूँ ये मेरे लिए हैं या मैं इनके लिए? कुछ तो ईश्वर ने अवश्य सोचा होगा, जो मुझे इन बच्चों के लिए चुना, मैं धन्य हूँ! खुद को इनके बीच पाकर। कोशिश करती हूँ इन्हें खूब पढाऊँ। इसलिये जाती हूँ इनके मन की गहराईयों में। ताकि समझ सकूँ इन्हें। हे ईश्वर शक्ति दो मुझे, ताकि बना सकूँ इंसान, दे सकूँ उन्हें अच्छा जीवन। शक्ति दो मुझे प्रभु! हे प्रभु!

मोना बनेजा,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय नेवरना,
विकास खण्ड–बिछिया,
जनपद–उन्नाव

भारत में विज्ञान की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ

विज्ञान और तकनीकी का किसी देश की प्रगति का सबसे बड़ा कारक है यह न सिर्फ नागरिकों को बेहतर जीवन शैली उपलब्ध कराता है बल्कि लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी निर्मित करता है। पिछले 70 वर्षों में भारत ने तकनीकी के क्षेत्र में काफी प्रगति की है परंतु यह प्रगति अन्य देशों की तुलना में काफी कम है और इसके लिए हमारी शिक्षा का वर्तमान ढाँचा, विद्यालयों में सुविधाएँ, उच्च शिक्षा में शोध के अवसर और छात्र तथा अभिभावकों की सोच बराबर जिम्मेदार नजर आते हैं। भारत अभी भी कई क्षेत्रों में तकनीकी के मामलों में अन्य देशों पर आश्रित नजर आ रहा है।

अगर हम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का अवलोकन करते हैं तो प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा में बच्चों के अंदर विज्ञान के प्रति समझ उत्पन्न करने के लिए एक मजबूत पाठ्यक्रम है पर उन्हें अपने मन के कौतूहल को शांत करने के लिए काम करने के अवसर काफी कम हैं। सरकारी विद्यालयों में पूर्व माध्यमिक स्तर पर अभी कुछ वर्षों पूर्व एक विज्ञान किट और छोटी प्रयोगशाला उपलब्ध करवाकर एक अच्छी पहल की गई है परंतु इसका सकारात्मक प्रयोग न तो अध्यापक जानते हैं और न ही छात्र। विज्ञान का व्यवहारिक अध्ययन काफी खर्चीला है ऐसे में किसी विद्यालय को विज्ञान के गिने–चुने उपकरण उपलब्ध करवा देने मात्र से छात्रों को अपने प्रोजेक्ट बनाने और अपनी कल्पनाशीलता को साकार करने की सुविधा उपलब्ध हो रही है यह कल्पना मात्र है। इस मामले में निजी विद्यालयों की स्थिति भी कोई बहुत अच्छी नहीं है वहाँ भी विज्ञान के अध्ययन के नाम पर केवल एक किताब ही है और प्रयोगशालाएँ गायब हैं। वहीं जापान, अमेरिका और चीन जैसे देशों में अत्यधिक साधन संपन्न प्रयोगशालाएँ उपलब्ध हैं।

माध्यमिक स्तर पर भी विज्ञान के अध्ययन के लिए कोई बहुत अच्छी सुविधाएँ नहीं हैं। अच्छे–अच्छे कान्वेंट भी कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के छात्रों के लिए प्रायोगिक कार्यों के नाम पर केवल खानापूर्ति ही की जा रही है। हालात यह हैं कि बच्चे वर्नियर कैलिपर्स को हाथ में लेकर उसकी रीडिंग तक पढ़ना नहीं जानते हैं। कई विद्यालय के कक्षा 12 के छात्र इन उपकरणों को पहिचान तक नहीं पाते हैं।

विज्ञान की प्रगति के लिए भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना इंस्पायर अवार्ड के लिए विद्यालयों से बच्चे उपलब्ध नहीं होते हैं जो अध्यापक विज्ञान में रुचि लेते हैं वह यू ट्यूब जैसे माध्यमों से आईडिया चुराकर अपने छात्रों का नामांकन करवाकर उन्हें एक बढ़िया राइटअप

रटवाकर वाहवाही लूट रहे हैं पर नवीन तकनीकी की खोज में इन प्रोजेक्ट की उपयोगिता नजर नहीं आती। हालाँकि सरकार की सोच में कोई कमी नजर नहीं आती है पर विद्यालय स्तर पर प्रोजेक्ट वर्क के लिए सामान उपलब्ध न होने, छात्रों में मौलिक विचारों की कमी, विज्ञान अध्यापकों की इस तरह के कार्यक्रमों में पर्याप्त जानकारी/रुचि न होने से यह योजना भी गति नहीं पकड़ पा रही है।

विज्ञान और तकनीकी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों के चिंतन को ''करके सीखने'' का पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराया जाए और इसके लिए प्रत्येक विद्यालय में एक सक्रिय और सुविधा सम्पन्न प्रयोगशाला और उपकरण होना आवश्यक है। इन उपकरणों और प्रयोगों से सम्बंधित सामग्री की लगातार उपलब्धता काफी खर्चीला काम है जिसके लिए अत्यधिक धन और प्रशिक्षित अध्यापक/लैब अटेंडर की जरूरत होती है इसलिए सरकारी पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अभी इसके विकसित होने की संभावनाएँ अभी काफी कम नजर आ रही हैं।

विज्ञान के मौलिक विकास में अभिभावक की सोच भी काफी महत्वपूर्ण होती है ज्यादातर निजी विद्यालयों में कक्षा–8 तक के छात्रों को दिये प्रोजेक्ट को पूरा करवाने में अभिभावक पर्याप्त रुचि लेते हैं और इसमे संसाधन और धन भी उपलब्ध करवाते हैं और यही अभिभावक कक्षा 9 से छात्रों को विषय पढ़ने और कोचिंग सेंटर में अधिक समय व्यतीत करने का दबाब डालने लगते हैं क्योंकि उनकी प्राथमिकता छात्र के मेडिकल या इंजीनियरिंग में चयन हो जाती है और छात्र की रुचियाँ द्वितीयक हो जाती हैं। वहीं सरकारी विद्यालय के छात्रों के अभिभावक गरीबी के कारण प्रोजेक्ट वर्क के लिए किसी प्रकार की सुविधा उपलब्ध नहीं करवा पाते हैं। ऐसे में छात्रों की विज्ञान के प्रति मौलिक सोच का विकास पर्याप्त नहीं हो पाता है और यह समस्या उच्चतर माध्यमिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक छात्र को विज्ञान के प्रति समझ को आगे नहीं बढ़ने देती।

भारत के ज्यादातर छात्रों का उद्देश्य आई आई टी और मेडिकल की परीक्षा में पास होकर नौकरी पाना मात्र है। मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा के बाद विज्ञान और तकनीकी में शोध के अवसरों की न तो जानकारी होती है और न ही उनकी इस क्षेत्र में रुचि दिखती है। साथ ही सरकार की तरफ से इस क्षेत्र में छात्रों को आकर्षित करने के लिए कोई विशेष प्रयास होते नही दिखते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अब इसकी व्यापक चिंता की गई है और उच्च शिक्षा में शोध को बढ़ाने के लिए कई अनुशंसा की गई हैं। पर प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर पर इसके बढ़ावा देने के लिए ज्यादा प्रयास नहीं सुझाये गए हैं जबकि विज्ञान और तकनीकी में छात्र को आगे ले जाने के लिए प्रारंभिक

कक्षाओं से ही उसे पर्याप्त अवसर दिए जाने की आवश्यकता है।

हालाँकि भारत में जुगाड़ से बहुत आविष्कार किए जाते हैं परंतु उनके प्रमाणीकरण की व्यवस्था न होने और मानव सम्पदा और पेटेंट की जानकारी के अभाव में ऐसी देशी तकनीकी का उपयोग बड़े स्तर पर नहीं हो पाता और प्रतिभाएँ आरंभिक चरण में ही हिम्मत हार जाती हैं।

भारत ने रक्षा क्षेत्र में तकनीकी में काफी विकास किया है और पूरी दुनिया ने इसे सराहा है। इसके साथ ही भारत मे तकनीकी के रूप में कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक संभावना नजर आती है भारत की 40 प्रतिशत आबादी रोजगार के लिए कृषि पर आश्रित है इसलिए इस क्षेत्र में तकनीकी के इस्तेमाल और नई तकनीकी की खोज काफी लाभप्रद हो सकती है। कृषि में अभी भी हरियाणा और पंजाब के किसानों ने कई नए यंत्रों का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसको अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहिचान भी मिलने लगी है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की विज्ञान और तकनीकी में रुचि उत्पन्न कर कृषि क्षेत्र में उनको शोध के लिए प्रेरित करना अर्थव्यस्था और रोजगार के लिए काफी फायदेमंद हो सकता है और यह भारत की तकनीकी को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में भी कारगर होगा।

अवनीन्द्र सिंह जादौन

विज्ञान अध्यापक

संयोजक मिशन शिक्षण संवाद

मिशन गीत

आओ हम कुछ सीखें और कुछ सिखलाएँ,
संवाद परिवार हमें है बहुत कुछ सिखलाता
बच्चों का शिक्षक से बन जाए गहरा नाता
मिशन से जुड़कर हम अपना विद्यालय महान बनाएँ
मिशन शिक्षण संवाद के परिवार से जुड़ जाएँ
इसमें मिलते अनमोल रत्न विचार शक्ति, विचार दर्शन,
महिला सशक्तिकरण, बाल सामयिकी और नैतिक दर्शन
पद्य और गद्य को अपने स्वरों में पिरोते जाएँ,
मिशन शिक्षण संवाद के परिवार से जुड़ जाएँ
हर बच्चे का शिक्षक से होता है गहरा नाता
एक–एक बच्चा पढ़ जाए यही मिशन का वादा
इससे जुड़कर नया करें कुछ
कुछ नया चमत्कार दिखलाएँ,
मिशन शिक्षण संवाद के परिवार से जुड़ जाएँ
नई कविता नई कहानी नया टी.एल.एम. बनाएँ
इस मिशन के जरिए हम हर शिक्षक तक पहुँचाएँ
नहीं है मुश्किल कुछ भी कुछ नया कर दिखाएँ
मिशन शिक्षण संवाद के परिवार से जुड़ जाएँ
नया दौर है नया जमाना नई तरंगें लाएँ
हर बच्चा हो शिक्षित अपना यही लक्ष्य अपनाएँ
गाँव– गाँव के हर विद्यालय में मिशन शक्ति जगाएँ
मिशन शिक्षण संवाद के परिवार से जुड़ जाएँ

रेनू शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–सलोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

निष्ठक नियरे राखिए

शिक्षा नीति

अर्थ – बच्चे के शारीरिक, मानसिक, वातावरणमय और पराधीनता से स्वतंत्र रूप एवं गुणवत्ता में सुधार हेतु विकसित शिक्षा की बुनियादी प्रणाली को शिक्षा नीति कह सकते हैं।

नयी शिक्षा नीति–भारत की नयी शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है। जो भारत के भविष्य यानी बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराकर भारत को वैश्विक ज्ञान का महाशक्ति बनाने में प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेंगी तथा बच्चों में व्यवहार, बुद्धि, कौशल स्थायी विकास, जीवनयापन एवं वैश्विक नागरिक बनाने में महत्त्वपूर्ण साबित होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य बातें जो उभरकर सामने आईं

शैक्षिक प्रणाली–इस शिक्षा नीति में शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों।

विद्यालय शिक्षा–यह शिक्षा नीति जो वर्तमान में 10+2 वाली विद्यालय व्यवस्था को 3 से 18 तक ले लिए सभी बच्चों को पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 में एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने को बताया है जिसमें प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है जिससे बेहतरीन उपलब्धियाँ हासिल हो सकें।

ईसीसीई–नयी शिक्षा नीति में बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भौतिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, नैतिक, सांस्कृतिक, भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक विकास को मजबूत करने के लिए लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल और गतिविधि आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है।

एनसीईआरटी–नयी शिक्षा नीति में आठ वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए दो भागों में एक प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए उत्कृष्ट पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढाँचा (0–3 और 3–8 वर्ष तक के बच्चों के लिए) विकसित किया जाएगा जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नवाचारों एवं सर्वोत्तम प्रथाओं पर शोध शामिल होगा।

शिक्षकों के रिक्त पद–इस शिक्षा नीति में विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों और उन क्षेत्रों में जहाँ शिक्षक – बच्चों का अनुपात ज्यादा हो या साक्षरता दर निम्न हो वहाँ पर स्थानीय शिक्षक या स्थानीय शिक्षकों को नियुक्त करने करने के लिए जल्द से जल्द और समयबद्ध तरीके से भरे जाएँगे।

पुस्तक और डिजिटल पुस्तकालय–इस शिक्षा नीति में सभी भारतीय एवं स्थानीय भाषाओं में बालसाहित्य और सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय एवं स्थानीय पुस्तकालयों में बड़ी मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध करवायी जाएँगी। वहीं दूसरी ओर पुस्तकालय को डिजिटल रूप देने के लिए

डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना की जाएगी जिससे बेह्तरीन परिणाम प्राप्त होंगे।

ड्रॉप –आउट बच्चों को पुनः जोड़ना–वर्तमान समय में गाँवों में विषम परिस्थितियों के मद्देनजर अनेकों बच्चे विद्यालय से ड्रॉप आउट हो जाते हैं। उन विषम परिस्थितियों का पता करके बच्चों को पुनः विद्यालय से जोड़ना एवं आगे से ड्रॉप आउट होने से रोकना मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए जहाँ विद्यालय नहीं है वहाँ विद्यालय की स्थापना, विशेषकर बालिका छात्रावास, वैकल्पिक और नवीन शिक्षा केन्द्र स्थापित किए जाएँगे।

बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति–हम सभी जानते हैं बच्चे घर में बोली जाने वाली भाषा और मातृभाषा की सार्थक अवधारणाओं से अधिक सीखते और समझते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का माध्यम घर की भाषा, मातृ भाषा, स्थानीय भाषा और क्षेत्रीय को बढ़ावा दिया जाएगा जिससे सीखने और सिखाने में गुणवत्तापूर्ण सुधार होगा।

बोर्ड परीक्षाओं में उच्च स्तर जोखिम समाप्त–विद्यार्थियों के लिए 10 वीं और 12 वीं बोर्ड परीक्षाओं में असफल होने का डर रहता है। इस डर को दूर करने के लिए सभी छात्रों को विद्यालय वर्ष के दौरान दो बार बोर्ड परीक्षा देने की अनुमति दी जाएगी जिसमे एक मुख्य परीक्षा और दूसरी यदि वांछित हो तो सुधार के लिए।

शिक्षक पात्रता परीक्षा–इस शिक्षा नीति में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक बनने के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) को विस्तृत रूप दिया जाएगा तथा शिक्षा के प्रति जोश और उत्साह को जाँचने के लिए साक्षात्कार और कक्षा में पढ़ाने का तरीका का मूल्यांकन शामिल किया गया है।

शिक्षक ऑनलाइन प्लेटफार्म–इस शिक्षा नीति में शिक्षक को स्वयं में सुधार हेतु आधुनिक विचार और नवाचारों को सीखने के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्म विकसित किया जाएगा ताकि शिक्षक विचारों को सभी के समक्ष साझा कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य कमियाँ जो उभर कर सामने आईं–

शिक्षा का निजीकरण–इस शिक्षण नीति में निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानों की स्थापना की जाएगी तथा ऐसे अधिनियम पारित होंगे जो निजी उच्चतर शिक्षण संस्थानों को स्थापित करने में समर्थ बनाएँगे।

वर्तमान आँगनबाड़ी केन्द्रों की स्थिति–नयी शिक्षा नीति में बच्चों के लिए अनुकूल प्रयास किए गए हैं परंतु इनके लिए कितने आँगनबाड़ी केंद्र तैयार है क्योंकि बहुत से आँगनबाड़ी केन्द्र विद्यालय में तो कही छोटे कमरे में संचालित हैं। कहीं खेल का मैदान नहीं तो कहीं संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। केन्द्रों पर कार्यरत सहायिका, कार्यकर्ता के विभिन्न कार्य होने से बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा

है। केंद्रों पर विशेष प्रशिक्षक की आवश्यकता होगी जो वर्तमान उपलब्ध नहीं है।

स्थानांतरण पर रोक—नयी शिक्षा नीति में शिक्षकों के स्थानांतरण लगभग बंद किए जा रहे हैं तथा केवल पदोन्नति पर ही स्थानांतरण का प्रावधान शामिल किया गया है। जो शिक्षकों के लिए अनुकूल नहीं है क्योंकि कई एकल शिक्षक हैं तो कई पति – पत्नी दोनों शिक्षक होते हैं तथा कई एकल शिक्षक होने से परिवार की विभिन्न परिस्थितियों के वक्त परिवार के पास मौजूद रहना जरूरी है और यह तभी संभव है जब स्थानांतरण प्रकिया सरल हो तथा एक सिस्टम के जरिए स्थानांतरण लागू हो।

कानून का जिक्र नहीं एवं विपरीत प्रभाव—नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा अधिकार कानून – 2009 एवं उसके विभिन्न दायरों से संबधित विस्तार का जिक्र नहीं किया गया है तथा कक्षा 6 से बच्चों की व्यवसायिक शिक्षा शुरू करने से बच्चों पर विपरीत प्रभाव देखने को मिलेंगे।

नर्सरी टीचर एवं उनकी ट्रेनिंग—इस शिक्षा नीति के अनुसार बच्चा 3 वर्ष का होने पर आँगनबाड़ी या विद्यालय में प्रवेश ले सकता है परन्तु इसके लिए नर्सरी टीचर वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं तथा बहुत से राज्यों में कोर्स भी संचालित नहीं हैं जबकि यह नीति 2023 तक लागू करनी है तथा तीन वर्ष में इतनी अधिक संख्या में नर्सरी टीचर की व्यवस्था कैसे होगी? ऐसे में यह काम तय समय में हो पाएगा पता नहीं।

शिक्षक नियुक्ति में साक्षात्कार से भ्रष्टाचार बढ़ेगा—वर्तमान में शिक्षकों की नियुक्ति साक्षात्कार से नहीं होती है। केवल परीक्षा की मेरिट के आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है। परंतु नई शिक्षा नीति में शिक्षक बनने के लिए साक्षात्कार की प्रक्रिया से गुजरना होगा जो सभी के लिए अनुकूल नहीं है क्योंकि साक्षात्कार में भ्रष्टाचार और विभिन्न उच्च व्यक्तियों का बोलबाला अधिक रहता है जो आम बच्चे के लिए अनुकूल नहीं है।

सारांश – नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सकारत्मक संकलन के साथ नकारात्मक व्यवकलन भी शामिल

कुमार जितेन्द्र ''जीत''
कवि, लेखक, विश्लेषक, वरिष्ठ अध्यापकदृगणित,
साईं निवास मोकलसर,
तहसील—सिवाना,
जनपद—बाड़मेर,
राजस्थान।

पॉकेट बुक

निर्माण सामग्री– तीन A–4 साइज पेपर, वैक्स कलर, स्केच पेन, ब्लैक पेन, कैंची, गोंद, स्टेपलर।

निर्माण– 1 पेपर के चार भाग कर लें। इस प्रकार 12 बराबर कागज के टुकड़े हो जाएँगे। 10 पेपर के टुकड़ों पर दायीं ओर कार्टून एवं उनके संवाद लिखे जाएँगे तथा बायीं ओर उनका अंग्रेजी नाम, उच्चारण और कोई विशेष टिप्पणी लिखी जाएगी। उचित रंगों से रंगकर उसे सुंदर रूप प्रदान कर दीजिए। बचे दो टुकड़ों को गोंद से जोड़कर कवर पेज बना लीजिए। सभी पेज को स्टेपलर की मदद से स्टेपल कर दीजिए। स्टेपलर की पिन छुपाने के लिए उतनी लंबाई का कागज काटकर चिपका दीजिए। लीजिए, पॉकेट बुक तैयार है आपके विद्यार्थियों के लिए।

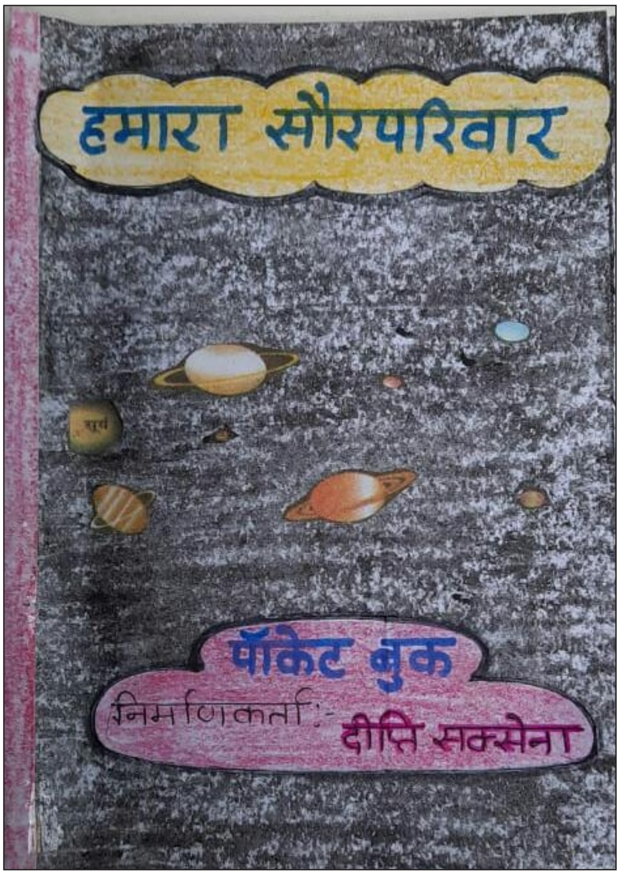

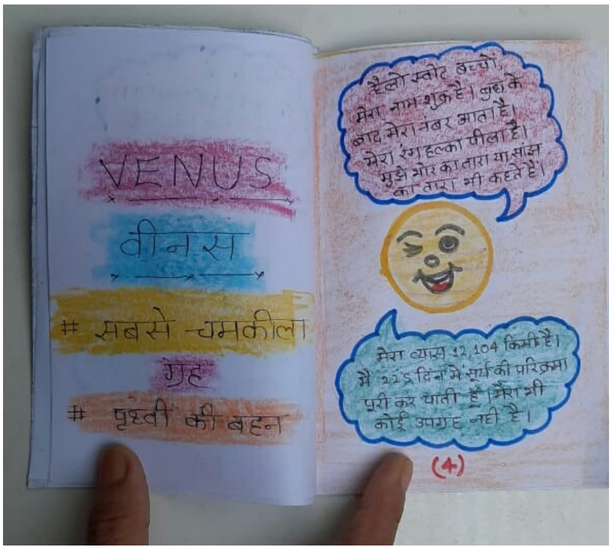

दीप्ति सक्सेना,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कटसारी,
विकास क्षेत्र–आलमपुर जाफराबाद,
जनपद–बरेली।

बिना मात्रा के शब्द बनाना

कराने का तरीका– कक्षा के सभी बच्चों को एक बड़े गोले में बिठा लो। फिर एक बच्चे से 1, दूसरे से 2, तीसरे से 3, चौथे से 4, पाँचवें से 5, छठवें बच्चे से फिर 1, सातवें से 2, आठवें से 3, नवें से 4, दसवें से 5, ग्यारवें से 1 और इसी तरह कक्षा के सभी 24 बच्चों को गिनती बोलने को कहेंगे। ऐसा करके कक्षा के 24 बच्चों के पाँच समूह बन जाएँगे। अब पाँचों समूहों को वर्णमाला के रंगीन अक्षर दिए जाएँगे और सभी को दो अक्षर के बिना मात्रा के शब्द बनाने को कहेंगे। सभी को 5 मिनट का समय दिया जाएगा। जो समूह 5 मिनट के निर्धारित समय में ज्यादा शब्द बनाएगा वह समूह विजेता कहलाएगा। फिर सभी बच्चे विजेता समूह के लिए विशेष ताली बजाएँगे।

इसी तरह दोबारा सभी समूहों को तीन अक्षर वाले बिना मात्रा के शब्द बनाने को कहेंगे। जो समूह निर्धारित समय में ज्यादा शब्द बनाएगा। वह विजेता होगा और उसके लिए विशेष ताली बजवाई जाएँगी।

फिर इसी तरह सभी समूह को चार अक्षर वाले बिना मात्रा के शब्द बनाने होंगे। जो समूह ज्यादा शब्द निर्धारित समय में बनाएगा वह जीतेगा और उसके लिए तालियाँ बजेंगी।

इस गतिविधि में सभी बच्चे रंगीन वर्णमाला के अक्षरों से शब्द बनाने में अधिक रूचि लेते हैं और नए शब्द सीखते हैं क्योंकि सभी समूह गिनती के अनुसार बने हैं तो सभी समूह में बालक और बालिका दोनों होंगे जिससे कि लड़का लड़की में भेदभाव कम होगा और बच्चों को समूह में काम करने की भावना जागृत होगी।

मनीषा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय भैंसा प्रथम,
विकास खण्ड–मथुरा
जनपद–मथुरा।

शेडो पपेट द्वारा शिक्षण

ये तो सभी जानते हैं कि बच्चे हों या बड़े जब वह कोई चित्र या फिल्म देखते हैं तो उनके मष्तिष्क पर गहरा असर छोड़ते हैं। शेडो पपेट के द्वारा शिक्षण बच्चों को बहुत मनोरंजक लगता है। बिल्कुल किसी लघु मूवी (फिल्म) के जैसा।

उद्देश्य– इस विधि में कहानी के आधार पर पपेट तैयार करके प्रत्येक विषय को आप बच्चों को आसानी से समझा सकते हैं। बच्चे जब कहानी देखते हैं, जो उनकी आँखों के सामने चल रही होती है तो उनका मनोरंजन होता है और सीखने में उनकी रुचि अधिक बढ़ जाती है। हर प्रश्न का उत्तर वो आसानी से देते हैं और स्कूल में बच्चों की संख्या भी बढ़ने लगती है। पपेट्री द्वारा शिक्षण में सम्प्रेषण बहुत ही प्रभावपूर्ण होता है।

प्रकरण– सड़क सुरक्षा नियम

सहायक सामग्री– पुराने कार्ड से बना आदमी, कार, जेब्रा क्रॉसिंग, स्ट्रीट लाइट, सुई धागा, पुराना सफेद मलमल या सूती दुपट्टा, फेवीकोल, पेपर से बनी छड़ी, टॉर्च (रोशनी के लिये), हॉर्न साउंड आदि।

प्रक्रिया–

1.सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा में दुपट्टे को बीच में बाँध दे या दो बच्चों से पकड़वायेगा। कक्षा के खिड़की दरवाजे बंद करवा देगा। उसके बाद दो छात्रों के साथ मिलकर रोलप्ले करेगा।

2.कक्षा में जब थोड़ा अंधेरा हो जाएगा तब शिक्षक पर्दे के पीछे छिपकर टॉर्च से पर्दे पर रोशनी करेगा। छात्र पर्दे के पीछे पपेट को चलाते हुए बोलना प्रारम्भ कर देंगे। साथ ही शिक्षक उसमें साउंड भी देगा। सामने से देखने पर यह लगता है जैसे थियेटर में मूवी चल रही हो। बच्चे अपनी आवाज में सड़क पर हमें क्या–क्या सावधानी रखनी चाहिए, इन सबकी जानकारी देंगे। जैसे–जेब्रा क्रॉसिंग, लाल हरी बत्ती आदि के बारे में बतायेंगे।

3.इस माध्यम से कक्षा का माहौल भयमुक्त व रुचिकर बन जाता है और बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि होती है। जो बच्चे उत्तर नहीं देते वो भी बोलने लगते हैं।

4.बच्चों को पूरी जानकारी हो जाती है कि उनको सड़क पर चलते समय कौन–कौन सी बातों का ध्यान रखना है।

बच्चों द्वारा आर्ट एवं क्राफ्ट में भी रुचि दिखाई देने लगती है। यह विधि सभी विषयों के लिए बहुत उपयोगी है। दो चार पपेट तैयार करो और नई नई कहानियाँ बनाओ।

राजदा परवीन,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय दासीपुर,
विकास खण्ड–भरथना,
जनपद–इटावा।

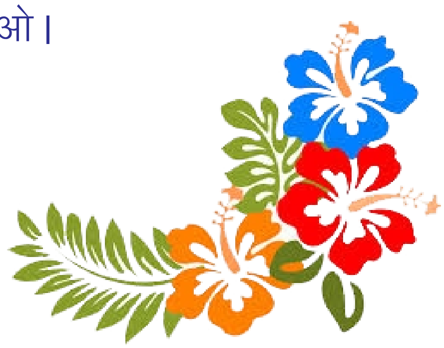

English Medium Diary

HOW TO EASE TEACHING AND LEARNING ENGLISH

English better called "Global language" is second most used language not only in India but many countries all over the world as a mode of communication. It has its usage in education, science ,business ,entertainment, technology and even in sports. Moving towards importance of English as an international and foreign language and why it is important to learn English and educate our coming generation in English medium. Language is a primary source of communication it is a method through which we share our ideas and thoughts with others. Out of all spoken languages English is most commonly spoken all over the world .Our motto to educate o children is that they stand on their own with their heads high not only in our country but wherever they go in the world .Among 400 Billion native speakers English is understood or spoken by one to 1.6 billion people so to sustain worldwide English medium is must .

English is easy to learn. It has simple vocabulary so no student will face any difficulty to understand it.It is the language of internet most of the content produced on the internet is an English so by knowing and understanding English we can explore the world through internet.

Keeping the above mentioned features of English and also the increasing demand of modern day parents to teach their kids in English medium ,In 2015 the basic education department had converted a few primary schools of Uttar Pradesh into English medium institutions and further in 2017 basic education minister opened over 5000 English medium primary schools assessing their popularity among students but not just converting schools into English medium would work, we will have to take a step forward into training teachers in English and providing schools with modern facilities like computers, projectors, disciplined activity areas and sports facilities which will not only train students in English but also in technology and help them go along with this modern world.

Archana Arora,
Head Mistress,
Primary School Barethar Khurd,
Block-Khajuha,
District-Fatehpur.

मेजर ध्यान चंद

हमारे देश भारत में महान खिलाड़ियों की कमी नहीं है, जो देश के लिए खेलते हैं और देश का मान बढ़ाते हैं।उन खिलाड़ियों में से एक मेजर ध्यानचंद सिंह हैं। जिनको हॉकी का जादूगर कहते हैं। आज भी हमारा देश इस महान विभूति का ऋणी है। इनका जन्म 29 अगस्त 1905 प्रयागराज में हुआ था। इनकी मृत्यु 3 दिसंबर 1979 को नई दिल्ली में हुई थी।

मेजर ध्यानचंद सिंह भारतीय हॉकी के भूतपूर्व खिलाड़ी और कप्तान थे। वे भारतीय हॉकी टीम को तीन बार ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलाने मे सफल रहे। मेजर ध्यानचंद का बचपन से हॉकी के प्रति कोई विशेष रुझान नहीं था। किन्तु प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह भारतीय सेना में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हुए। वहीं सूबेदार को हॉकी खेलते देख मन में हॉकी के प्रति रुचि जागृति हुई और धीरे–धीरे सतत् अभ्यास, लगन और संकल्प से हॉकी के सर्वोच्च खिलाड़ी बन गये। मेजर ध्यानचंद जब हॉकी खेलते तो लगता था मानो हॉकी स्टिक में गोंद लगा हो। इन्होंने लगातार तीन बार भारत की ओर से ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1928, 1932, 1936 में भारत को हॉकी ओलंपिक में स्वर्ण पदक दिलाया। 1956 में मेजर ध्यानचंद को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

मेजर ध्यानचंद सिंह जी सम्बन्धित एक प्रेरक प्रसंग प्रचलित है जो हम सबको बहुत ही प्रेरित करने करने वाला है।

यह घटना उन दिनों की है जब भारत और जर्मनी के बीच हॉकी वर्ल्डकप का फाइनल मुकाबला था। जिसे देखने के लिए जर्मनी के तानाशाह हिटलर भी स्टेडियम में थे। मैच देखने के बाद उन्होंने मेजर ध्यानचंद सिंह से कहा कि आप अपने देश को छोड़कर हमारे देश जर्मनी के लिए खेलो हम तुम्हें फील्ड मार्शल बना देंगे। किन्तु हिटलर के इस प्रस्ताव को मेजर ध्यानचंद सिंह ने ठुकरा दिया और कहा कि अपने देश भारत का नाम रोशन करना और देश को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाना मेरी जिम्मेदारी है। मैं यह जिम्मेदारी निभाऊँगा। किसी भी प्रकार का लालच और प्रलोभन उनको विचलित नहीं कर पाया। वह देश प्रेम की भावना से सराबोर थे। इस प्रकार मेजर ध्यानचंद सिंह जी अपने देश के तन– मन–धन से समर्पित थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
संविलियन विद्यालय अमौली,
शिक्षा क्षेत्र–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

मदर टेरेसा

मदर टेरेसा एक बहुत ही धार्मिक और प्रसिद्ध महिला थीं। जो गटरों की सन्त के रूप में भी जानी जाती थीं। वो पूरी दुनिया की एक महान शख्सियत थीं। वो भारतीय समाज के जरुरतमंद और गरीब लोगों के लिए पूरी निष्ठा और प्यार के परोपकारी सेवा को उपलब्ध कराने के द्वारा एक सच्ची माँ के रूप में हमारे सामने अपने पूरे जीवन को प्रदर्शित किया। मानव जाति की उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें सितम्बर 2016 में सन्त की उपाधि से नवाजा गया। जिसकी आधिकारिक पुष्टि वेटिकन से ही की गयी है।

कोट्स मदर टेरेसा के

1.शान्ति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है।

2.सबसे बड़ा रोग किसी के लिए भी कुछ न होना है।

3.जब भी हम एक–दूसरे से मिलें, मुस्कान के साथ मिलें, यही प्रेम की शुरुआत है।

4.बिना प्रेम के कार्य करना दासता है।

5.खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते, लेकिन अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।

6.सादगी से जियें ताकि दूसरे भी जी सकें।

7.अनुशासन लक्ष्यों और उपलब्धि के बीच पुल है।

8.मैं सफलता के लिए प्रार्थना नहीं करती, मैं सच्चाई के लिए करती हूँ।

9.कुछ लोग आपकी जिंदगी में आशीर्वाद की तरह, कुछ लोग एक सबक की तरह।

10.कल जा चुका है, कल अभी आया नहीं, हमारे पास केवल आज है, चलिये शुरुआत करते हैं।

11.यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हमने कितना दिया, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि देते समय आपने कितने प्रेम से दिया।

12.मैं–मैं करने से कोई लाभ नहीं, कर्म ही जीवन है।

13.जीवन मात्र ही पवित्र है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार इसे सुन्दर बनाना हमारा कर्तव्य है।

मदर टेरेसा का जन्म मेसेडोनिया गणराज्य के सोप्जे में 26 अगस्त 1910 में हुआ था और ओंकशे बोजाशिव के रूप में उनके अभिभावकों के द्वारा जन्म के समय उनका नाम रखा गया था। जो अपने माता–पिता की सबसे छोटी सन्तान थीं। कम उम्र में उनके पिता की मृत्यु के बाद बुरी आर्थिक स्थिति के खिलाफ उनके पूरे परिवार ने बहुत संघर्ष किया था। उन्होंने चर्च में चौरिटी के कार्यों में अपनी माँ की मदद करनी शुरू कर दी थी। वो ईश्वर पर गहरी आस्था, विश्वास और भरोसा रखने वाली महिला थीं। मदर टेरेसा अपने शुरुआती जीवन से ही अपने जीवन में पायी और खोयी सभी

चीजों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करती थीं। बहुत कम उम्र में उन्होंने नन बनने का फैसला कर लिया और जल्द ही आयरलैण्ड में लैरेटो ऑफ नन से जुड़ गयीं। अपने बाद के जीवन में उन्होंने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक शिक्षक के रूप में कई वर्षों तक सेवा की।

दार्जिलिंग के नव शिक्षित लैरेटो के एक आरम्भक के रूप में उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत की। जहाँ मदर टेरेसा ने अंग्रेजी और बंगाली (भारतीय भाषा के रूप में) का चयन सीखने के लिए किया। इस वजह से उन्हें बंगाली टेरेसा भी कहा जाता है। दोबारा वो कोलकाता लौटीं जहाँ भूगोल की शिक्षिका के रूप में सेंट मैरी स्कूल में पढ़ाया। एक बार जब वो अपने रास्ते में थीं, उन्होंने मोती झील झोपड़ पट्टी में रहने वाले लोगों की बुरी स्थिति पर ध्यान दिया। ट्रेन के द्वारा दार्जिलिंग के उनके रास्ते में ईश्वर से उन्हें एक सन्देश मिला कि जरुरतमंद लोगों की मदद करो। जल्द ही उन्होंने आश्रम को छोड़ा और उस झोपड़पट्टी के गरीब लोगों की मदद करनी शुरू कर दी। एक यूरोपियन महिला होने के बावजूद, वो एक हमेशा बेहद सस्ती साड़ी पहनती थीं।

अपने शिक्षिका जीवन के शुरुआती समय में, उन्होंने कुछ गरीब बच्चों को इकट्ठा किया और एक छड़ी से जमीन पर बंगाली अक्षर लिखने की शुरुआत की, जल्द ही उन्हें अपनी महान सेवा के लिए कुछ शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित किया जाने लगा और उन्हें एक ब्लैक बोर्ड और कुर्सी उपलब्ध कराई गई। जल्द ही स्कूल एक सच्चाई बन गयी। बाद में, एक चिकित्सालय और शान्ति घर की स्थापना की गयी, जहाँ गरीब लोग अपना इलाज करा सकें। अपने महान कार्यों के लिए जल्द ही वो गरीबों के बीच में मसीहा के रूप में प्रसिद्ध हो गयीं।

संजीव कुमार,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिकन्दरपुर (संविलयन)

मानवता को उन सभी नैतिक जडों तक हमें वापस ले जाना चाहिए,
जहाँ से अनुशासन और स्वतंत्रता का जन्म होता है।
—डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

ममतामयी माँ मदर टेरेसा....

''जो व्यक्ति दूसरों के लिए अपने स्वार्थ को त्याग कर दूसरों के लिए जीता है, वह मृत्यु के पश्चात भी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।'' ऐसी ही प्रेरणादायक व महान विभूति थीं मदर टेरेसा जिन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबों एवं जरूरतमंदों की सेवा में समर्पित किया था।

मदर टेरेसा का जन्म यूगोस्लाविया में 26 अगस्त 1910 को एक किसान परिवार में हुआ था, इनका वास्तविक नाम 'अग्नेस गोझा बोया जिजु' और इनके पिता का नाम 'निकोल बोयाजू' तथा माता का नाम 'द्रंना बोयाजू' था। इन्हें अपनी माँ से बहुत लगाव था। इन्होंने अपनी शिक्षा कान्वेंट स्कूल से शुरू की थी तथा साथ ही साथ केथोलिक चर्च से भी जुड़ी थीं। मदर टेरेसा अपने पाँच भाई बहनों मे सबसे छोटी व सुंदर थीं। इनके पिता एक धार्मिक प्रवत्ति वाले व्यवसायी थे। उनकी 1919 में मृत्यु हो गई थी, उस समय मदर टेरेसा 8 वर्ष की थीं। 12साल की उम्र में वे अपने चर्च के साथ एक धार्मिक यात्रा में गई थीं जिसके बाद उनका मन बदल गया और उन्होंने क्राइस्ट को अपना मुक्तिदाता स्वीकार कर लिया और येशु के वचन दुनिया में फैलाने का फैसला लिया।

मदर टेरेसा के अंदर अपार प्रेम था, जो किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि हर उस इंसान के लिए था जो गरीब, लाचार, बीमार, जीवन में अकेला था। 1928 में 18 साल की उम्र में ही नन बनकर उन्होंने अपने जीवन को एक नयी दिशा दे दी, नन बनने के बाद उनका नया जन्म हुआ और उन्हें सिस्टर मेरी टेरेसा नाम मिला । मदर टेरेसा भारत की नहीं थीं। लेकिन जब वे 1929 में पहली बार भारत आयीं तो यहाँ के लोगों से प्रेम कर बैठीं और यहीं अपना जीवन बिताने का निर्णय लिया। 24 मई 1931 में उन्होंने नन के रूप में प्रतिज्ञा ली।

टेरेसा को अंग्रेजी और बंगाली दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान हो गया था। कोलकाता में रहने के दौरान उन्होंने वहाँ की गरीबी, लोगों में फैलती बीमारी, लाचारी व अज्ञानता को करीब से देखा। ये सब बातें उनके मन में घर करने लगीं और वे कुछ ऐसा करना चाहती थीं जिससे वे लोगों के काम आ सकें। 1937 में उन्हें मदर की उपाधि से सम्मानित किया गया और अब वे मदर टेरेसा के नाम से जानी जाने लगीं। 1944 मे वे संत मेरी स्कूल की प्रिंसिपल बन गयीं।

10 सितम्बर 1946 को मदरटेरेसा को एक नया अनुभव हुआ जिसके बाद उनकी जिंदगी बदल गई।

उन्होंने कोलकाता में चौरिटीज के माध्यम से गरीब, बीमार, निराश्रितों की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। मदर टेरेसा मानवता की भलाई में विश्वास करती थीं।'' उनका मानना था कि हम सभी महान कार्य नहीं कर सकते लेकिन हम छोटे काम बड़े प्यार से कर सकते हैं।'' उन्होंने अथक परिश्रम किया और उनके कार्य ने दुनिया भर के लाखों लोगों को ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

उन्हें अपने प्रयासों के लिये कई पुरुस्कार और उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं। उन्हें 1962 मे पद्यश्री और 1980 में भारत रत्न सम्मान प्राप्त हुआ तथा 1979 में शांति के नोबेल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी जैसे अन्य कई देशों में नागरिक पहचानों से सम्मानित किया गया था।

1980 के बाद मदर टेरेसा को कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा था। इसके बावजूद वे अपनी शाखाओं का संचालन करती रहीं। अपने अंतिम समय तक उन्होंने गरीबों के शौचालय व अपनी नीली किनारी वाली धोती स्वयं साफ की थी। वास्तव में पीड़ित मानवता के प्रति करुणा से ओतप्रोत मदर टेरेसा ने अपनी कर्मभूमि भारत को ही नहीं बल्कि सारी दुनिया की मानवता को अपने ममतामयी आँचल की छाँव में समेट लिया था।

भारतीय वेशभूषा में मदर टेरेसा के इस सरल व प्रेम से ओतप्रोत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्व. प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने कभी कहा था—नम्रता और प्रेम की क्षमता का बहुत कुछ अनुभव तो मदर टेरेसा के दर्शन से ही हो जाता है।

इन ममतामयी माँ की मृत्यु 5 सितम्बर 1997 को बीमारी से हुई थी।

नीता वार्ष्णेय,
प्रधानाध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय आलमपुर कायस्थान,
विकास खण्ड—अतरौली,
जनपद—अलीगढ़

बाल–साहित्य

डोबू और राजकुमार

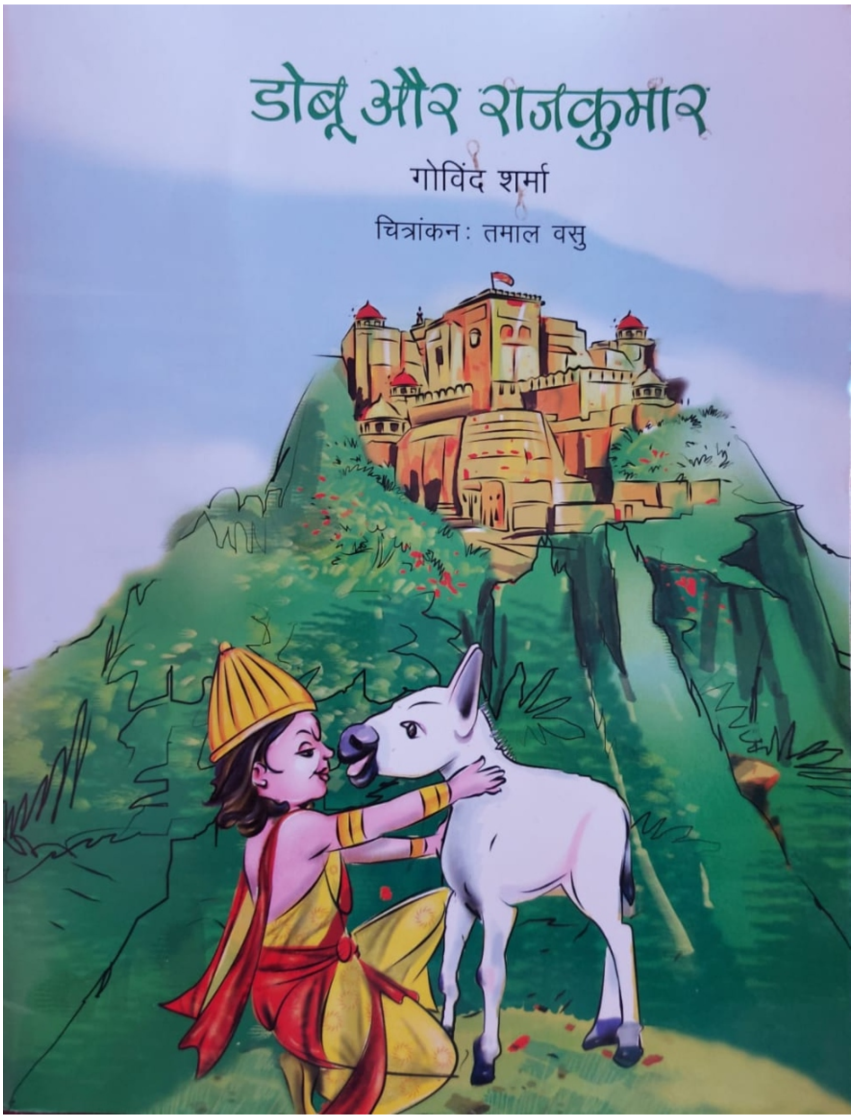

एनबीटी से छपी और गोविंद शर्मा द्वारा रचित डोबू और राजकुमार एक रोचक पुस्तक है। यह पुस्तक एक ओर बच्चों में पशुप्रेम जागृत करती है, वहीं अपने से कमजोरों का शोषण करने के बजाय उन्हें साथ लेकर चलने को प्रेरित करती है।

इस कहानी में हर्ष नाम का एक राजकुमार है। जो जब पहली बार ग्राम भ्रमण को जाता है तो उसे प्यारा सा गधे का बच्चा दिखता है। राजकुमार को वो गधा बहुत अच्छा लगता है और वो उसे पालना चाहता है। राजकुमार उसे प्यार से डोबू नाम भी दे देते हैं। लेकिन राजा और सैनिक राजकुमार के इस निर्णय से सहमत नहीं होते। वो हरसंभव प्रयत्न करते हैं कि राजकुमार डोबू को पालने की जिद छोड़ दें लेकिन अंततः उन्हें झुकना ही पड़ता है। राजमहल में डोबू अपनी वफादारी साबित करता है तो सब उसके मुरीद हो जाते हैं। लेकिन दूसरे राज्य के लोग उसे चुरा लेते हैं। पर डोबू की समझदारी, बहादुरी और वफादारी से शत्रु हार जाते हैं। राजकुमार जब बड़े होते हैं तो डोबू की सहायता से राज्य के कल्याण के कई कार्य करते हैं। उनके राजकाज संचालन से जनता अत्यंत प्रसन्न रहती है।

एकदम अलग तरह के कथानक को समेटे यह पुस्तक मनोरंजन और शिक्षा का सशक्त हस्ताक्षर है। तो अपने विद्यालय में इस पुस्तक को ला रहे हैं न आप?

बच्चों का कोना

निराली है

सूरज कहता चंदा से,
धरती कहती अम्बर से,
आग है कहती पानी से,
नाना कहते नानी से,
दुनिया बड़ी निराली है।
दुःख आया है, सुख आयेगा,
कहानी यही पुरानी है।।
दादा कहते दादी से,
रात भले ही हो दुःखवाली।
सुबह सुहानी आनी है।।
बच्चा बच्ची पढ़ने जाते,
पढ़ लिखकर फिर घर को आते,
घर में आकर प्यार हैं पाते,
घर तो जगह निराली है।।
मम्मी पापा सबको बताते,
बेटी बेटा एक समान,
दोनों तो हैं मेरी जान,
बेटा है गर दिल का टुकड़ा,
बेटी सबकी दुलारी है,
घर तो जगह निराली है।।

सरिता तिवारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कंदैला,
विकास खण्ड–मसौधा,
जनपद–अयोध्या।

मैं भी मैम बनूँगी,

माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी,
बड़ी होकर मैं मैम बनूँगी।
मुझको मैम अच्छी लगतीं,
मैं भी अच्छी मैम बनूँगी।
मैम ज्ञान की बातें बतातीं,
मैं भी शिक्षा की लौ बनूँगी।
बेटी है दो घर का उजाला,
मैम कहती मैं जग का उजाला
बनूँगी।
मैं भी सबका नाम रोशन करूँगी,
बड़ी होकर मैं मैम बनूँगी।

ऋतु दुबे,
प्राथमिक विद्यालय अण्डूतारा,
विकास खण्ड– अमानीगंज,
जनपद–अयोध्या

एकता में बल

शिक्षण संवाद

नन्दनवन का राजा शेरसिंह बड़ा ही विलासी और आलसी था। उसका महामंत्री गजराज बड़ा ही धूर्त ओर चालाक था, इसलिये वह राजा की विलासिता का फायदा उठा खुद नन्दनवन का राज–काज चलाने लगे। सत्ता के मद में गजराज अहंकारी हो गया और वह सभी जानवरों को बात–बेबात तंग करने लगा। गजराज की इन हरकतों से जंगलवासी परेशान रहने लगे, मगर बेचारी प्रजा अपना दुख कहे तो किससे कहे? राजा तो खुद महामंत्री गजराज के इशारों पर नाचता था क्योंकि महामंत्री हर पल राजा को शराब, शबाब ओर कबाब में सरोबार रखता था। आखिर तंग आकर एक दिन सभी जानवरों ने एक गुप्त सभा की, जंगल के सभी जानवरों ने शिरकत की। सभा का विषय था – 'महामंत्री की दुष्टता से कैसे छुटकारा पाया जाए?' सभा की अध्यक्षता करते हुए भालू ने कहा, 'हमें मिलजुल कर इस समस्या का हल करना है। सभी को अपनी बात कहने का पूरा हक है।' इतना सुनते ही कौआ अपनी कर्कश आवाज में बोला, 'हमें गजराज से छुटकारा पाने के लिये किसी मनुष्य की मदद लेनी चाहिए। गजराज जैसे बली को तो केवल कोई मनुष्य ही वश में कर सकता है, वह गजराज को पकड़कर ले जाएगा और फिर हम सब यहाँ फिर चैन से रहेंगे।' ये तर्क सुनकर कई जानवर एक साथ बोले, 'हाँ, हाँ, हाँ ये ठीक रहेगा।' खरगोश सबको चुप कराते हुए बोला, 'सुनो भाइयों, मेरी राय में तो ये तरीका सरासर गलत है।' कौए की बात का समर्थन करने वाले जानवरों के मुँह से एकसाथ निकला, 'क्यों गलत है?' बूढ़ा खरगोश सहजता से बोला, 'गजराज सत्ता के मद से हमें केवल तंग करता है, यदि हम किसी मनुष्य को बुलाकर गजराज जैसे बली को पकड़वा देते हैं तो फिर मनुष्य बेखौफ हो रोज नन्दनवन आएगा हममें से एक–एक को पकड़–पकड़कर ले जाएगा। तब हम कुछ भी न कर पाएँगे। अतः हमें अपनी समस्या को खुद सुलझानी चाहिए, एक आफत को दूर करने के लिए दूसरी बड़ी आफत को न्योता नहीं देना चाहिए।' बात इतनी सीधी और सपाट थी कि सबकी समझ मे आ गयी। समस्या की विकटता ने सभा में सन्नाटा फैला दिया। गीदड़ ने सन्नाटे को तोड़ते हुए कहा, 'अब इस समस्या का हल भी खरगोश बाबा ही बताएँगे। बूढ़ा खरगोश गम्भीरता से बोला, 'इस समस्या का केवल एक ही उपाय है।' सभी के मुख से एकसाथ निकला, 'क्या उपाय है?' खरगोश बोला, 'गजराज को थल पर केवल राजा शेरसिंह ही हरा सकते हैं, लेकिन राजा तो खुद उसका गुलाम बना हुआ है। अब गजराज को केवल जल में ही हराया जा सकता है, क्योंकि जल में सर्वशक्तिशाली मगरमच्छ होता है। अगर मगर दादा हमारी मदद करें तो गजराज से हमें मुक्ति मिल सकती है। खरगोश का तर्क सुन सब वाह–वाह करने लगे।

सभी जानवर एकत्रित होकर नन्दनवन के तालाब पर गए और मगर दादा से सब कह सुनाया। मगरमच्छ ने जानवरों की मदद का वादा कर लिया। अगली सुबह जब सत्ता के मद में चूर गजराज तालाब पर नहाने के लिए गया तो सभी जानवरों को सपनी शक्तिशाली सूंड से इधर–उधर फेंकने लगा तो पेड़ पर बैठा बन्दर बोला, 'महामंत्री जी, इतना गुमान भी ठीक नहीं, कभी–कभी सेर को सवा सेर भी मिल जाता है।' इतना सुनते ही क्रोधित हो गजराज ने उस पेड़ की शाखा को तोड़ डाला और बन्दर को अपनी सूंड में लपेटकर दूर फेंककर बोला, 'इस वन में मुझसे टकराने की किसमे हिम्मत है।' चिंघाड़ते हुए गजराज तालाब में घुस गया।

पानी में घुसते ही पानी मे तैयार बैठे मगरमच्छ ने गजराज की एक टाँग को अपने कालरूपी जबड़ों में दबाया और गजराज को पानी मे खींचने लगा। गजराज ने अपनेआप को छुड़ाने में अपनी सारी ताकत लगा दी, मगर सब बेकार। सामने साक्षात मौत को देख वह जोर–जोर से चिंघाड़ने लगा, उसने जानवरों को मदद के लिए पुकारा, लेकिन कोई भी मदद को आगे नहीं आया। मगर के जबड़ों में फँसा गजराज तालाब पर तमाशा देख रहे जानवरों से माफी माँगते हुए बोला, 'दोस्तों, मैंने तुम्हारे साथ सदा बुरा व्यवहार किया, जिसकी सजा आज मुझे मिल रही है। अलविदा कहते हुए गजराज ने अपनी आँखें मूंद ली। तभी बूढ़े खरगोश ने पूर्व योजनानुसार एक बड़ा सा रस्सा गजराज की तरफ फेंकते हुए कहा, 'महामंत्री जी, जब आपने हमें अपना दोस्त मान लिया तो अब हम आपको नहीं मरने देंगे। इस रस्से को पकड़ो। हम सारे मिलकर तुम्हें बचा लेंगे। आपने सुना तो होगा ही कि एकता में बल होता है।' गजराज ने रस्से को सूंड से पकड़ लिया और जैसे ही सबने मिलकर बोला, 'जोर लगाओ, हईशा....।' तो ये आवाज सुनते ही मगर ने गजराज का पैर छोड़ दिया और गजराज बच गया। अब सब फिर से नन्दनवन में आनन्दपूर्वक रहने लगे।

भूपसिंह भारती,
शिक्षक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय डेरोली अहीर (3795),
विकास खण्ड–अटेली,
जनपद–महेंद्रगढ़,
राजस्थान।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

पर्यायवाची

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/07/blog-post_13.html

एक ही अर्थ को करें प्रकट,शब्द अनेक समानार्थी।
वही कहलाते पर्यायवाची, वही कहलाएँ समानार्थी।।
भारती कहो, शारदा कहो या कहो वीणापाणि।
विद्या की देवी सरस्वती, वही कहलाये हंसवाहिनी।।
भृत्य कहो, सेवक कहो, दास कहो या नौकर।
परिचायक भी है वही, वही कहलाते अनुचर।।
नभ कहो या शून्य कहो, कहो व्योम या कहो गगन।
छू लो तुम आकाश को, वही कहलाता अनंत।।
आँख कहो, दृग कहो, कहो नेत्र या नयन।
दृष्टि, अक्षि, चक्षु वही, वही लोचन, विलोचन।।
ईश कहो, चाहे प्रभु कहो, दीनबंधु चाहे परमेश्वर।
वही जगदीश, वही परमात्मा, वही हमारे ईश्वर।।
इंद्र कहो, सुरेश कहो, कहो देवेश या देवेंद्र।
वही पुरंदर, सुरपति, नमः देवराज सुरेंद्र।।
उत्कर्ष करो, उन्नति करो, करो प्रगति और उदय।
करते चलो विकास, तरक्की, उन्नयन और अभ्युदय।।
कमल कहो, नीरज कहो, कहो राजीव या पंकज।
वही पद्म, शतदल वही, वही सरसिज, वही जलज।।
चंद्रमा कहो, इंदु कहो, कहो विधु या मयंक।
राकेश वही, वही हिमांशु, वही सुधाकर या शशांक।।
सर कहो, चाहे ताल कहो, कहो तड़ाग या पोखर।
वही जलाशय, पुष्कर वही, वही मानसरोवर।।
बेटा ही तो सुत, पुत्र है पूत, तनय और तनुज।
वही लड़का, वही कुमार, वही कहलाता आत्मज।।
सूर्य कहो, भानु कहो, कहो रवि या भास्कर।
वही कहलाये अरुण, सविता, वही होता प्रभाकर।।
रात कहो, रैन कहो, कहो निशा या रजनी।
वही रात्रि, वही राका, कादंबरी वही यामिनी।।
असुर कहो, राक्षस कहो, कहो दैत्य निशाचर।
वही कहलाता रात्रिचर, वही कहलाये रजनीचर।।
विधि कहो, प्रजापति कहो, चाहे कहो विधाता।
स्रष्टा वही, ब्रह्मा वही, वही है सृष्टि निर्माता।।

रचयिता
ऋतु सिंघल,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अंबेहटा चांद–1,
विकास खण्ड– रामपुर मनिहारान,
जनपद– सहारनपुर।

एक शिक्षिका की डायरी से

मैं 'मीनाक्षी शर्मा' पूर्व माध्यमिक विद्यालय, मोरा ब्लॉक मथुरा में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ।

2005 से आज 2020 तक इस शिक्षण यात्रा में अनेकों विद्यार्थी आते गए और अपने गंतव्य की ओर बढ़ते गए। बड़ा ही सुखद होता है किसी विद्यार्थी में छिपे हुए गुणों का अनावरण करना। ऐसा ही अपने एक प्रयास को आप सबके साथ साझा कर रही हूँ।

मुझे आज भी विस्मरण नहीं होता जब 2015 में हमेशा की भाँति कक्षा 6 के नवागंतुक छात्रों के साथ परिचय सत्र चल रहा था। इस दौरान तीन छात्राएँ निरंतर ही पीछे खिसकती जा रही थीं ताकि वह इस परिचय प्रक्रिया से बच सकें। उनके प्रयास से मैं अनभिज्ञ बनी रही। सबसे अंत में जब उन तक परिचय का दौर पहुँच ही गया तब तीनों केवल सिर झुकाकर खड़ी रहीं परंतु अपना नाम ना बता सकीं। बहुत प्रयासों के पश्चात भी मैं अनुभवी शिक्षिका जो मनोविज्ञान में मास्टर डिग्री हासिल किए थी, उनसे उनका नाम भी पता नहीं कर सकी।

इस परिचय सत्र के साथ ही मैं समझ चुकी थी कि इन छात्राओं के साथ आगामी 3 साल के लिए मुझे कटिबद्ध होना पड़ेगा। सहपाठियों की सहायता से पता चला कि मेरे सामने 3 चुनौतियों के रूप में रूबी सिंह, रजनी कुमारी व शशि कला खड़ी थीं।

सत्र प्रारंभ के 2 सप्ताह में मैं केवल इतना पता कर सकी कि तीनों का ही अक्षर ज्ञान से कोई परिचय नहीं था चुनौती अब और कठिन हो चुकी थी।

मेरा केवल एक मात्र उत्प्रेरक उनकी आँखें थीं जो मुझसे कुछ उम्मीद रखती थीं। सर्वप्रथम कक्षा का विभाजन कर कक्षा को सम्मिलित समूहों में बैठकर शिक्षण कार्य शुरू किया।

एक माह पश्चात किए परीक्षण में तीनों की प्रगति ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। मैं दुगने उत्साह के साथ उन्हें अतिरिक्त समय भी देने लगी। धीरे–धीरे तीनों बालिकाओं की मेहनत व निरंतर उपस्थिति का परिणाम उनके धारा प्रवाह किताब पढ़ पाने की योग्यता के रूप में सामने आया।

उनके विद्यार्थी जीवन के 3 वर्ष व्यतीत करने के बाद जब 2018 में रूबी रजनी व शशि कला हमारे विद्यालय से विदा हो रही थीं। तब विदाई समारोह में रूबी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत अंग्रेजी में परिचय के साथ की। मैं स्वयं को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किसी अध्यापक से कम नहीं आँक रही थी क्योंकि मेरे प्रयासों को मेरी छात्राओं द्वारा पुरस्कृत किया गया।

आज तीनों छात्राएँ कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा हेतु कभी–कभी सलाह लेने आती रहती हैं। उनके सीखने की ललक व जीवन में मेरे ही समान अध्यापक बनने की उनकी प्रेरणा मुझे भी मेरे विद्यार्थियों को अपना सर्वोत्तम देने के लिए आज भी प्रेरित करती है।

मीनाक्षी शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मोरा,
विकास खण्ड–मथुरा,
जनपद–मथुरा।

षटकर्म का मुख्य कार्य (वात – कफ का संतुलन)

प्रत्येक मानव शरीर की प्रकृति त्रिगुणात्मक होती है अर्थात वात – पित्त – कफ संतुलित होने पर ही मानव स्वस्थ रहता है। षटकर्म मुख्य रूप से यही कार्य करता है कि वह मानव के इन तीनों गुणों में उचित संतुलन पैदा करता है। अष्टांग योग में यम – नियम का क्रम आसन प्राणायाम से पहले आता है। अतः आसन प्राणायाम से पूर्व यम – नियम का पालन अनिवार्य व आवश्यक होता है। ''नियम'' के अन्तर्गत ही एक नियम है ''शौच''। शौच अर्थात शरीर शुद्धि योग साधक के लिए आसन – प्राणायाम से पूर्व षटकर्म को करना अति आवश्यक व अनिवार्य बताया गया है। कहा गया है कि साधक धौति, बस्ति, नेति, नौली, त्राटक व कपालभाति इन घटकर्मों का आचरण व अभ्यास अवश्य करें। वास्तव में शरीर को स्वच्छ, सुंदर व स्वस्थ रखने के लिए षटकर्म से उत्तम और कोई साधन नहीं है।

षटकर्म इन तीनों को सम अनुपात में लाने में मदद करता है। यदि इनका अनुपात बिगड़ जाए तो अनेकानेक रोग शरीर में जन्म लेते हैं।

जैसे – कफ : कफ का अनुपात ज्यादा है तो खाँसी, बलगम, दमा, श्वांस रोग, टी. बी. आदि।

वात : वात का अनुपात ज्यादा है तो गैस, बदहजमी, गठिया, जोड़ों का दर्द आदि।

पित्त : पित्त का अनुपात ज्यादा है तो गर्मी, पीलिया, बवासीर, जिगर (यकृत) खराबी, हिपैटाइटिस – बी आदि।

कफ रोगों का निदान : सूत्रनेति, जलनेति एवं कपालभाति से कफ की अधिकता को समाप्त किया जा सकता है। कुंजल, वायु एवं पित्त विकार की अधिकता को समाप्त करता है। साधक को साप्ताहिक कुंजल, प्रतिदिन नेति, वर्ष में दो बार शंख प्रक्षालन अवश्य करना चाहिए। आजकल के गलत रहन – सहन और गलत खान – पान से शरीर स्वस्थ नहीं रह पाता है। शरीर में मल व विकार जमा हो जाता हैं। अतः शरीर के मल व विकारों को नियमित रूप से बाहर करने के लिए शरीर शोधन के लिए यौगिक षटकर्म अति आवश्यक है क्योंकि षटकर्म से ही वात – पित्त – कफ में एक सही संतुलन उत्पन्न होता है। इन तीनों के संतुलन से ही शरीर स्वस्थ रहता है।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
संविलियन विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड–सिकंदराबाद,
जनपद–बुलंदशहर।

कूद

लम्बी कूद

यह एक ट्रैक ऐंड फील्ड खेल है जिसमें एथलीट को टेक ऑफ प्वाइन्ट से जितना सम्भव हो छलाँग लगाने की कोशिश में, गति, ताकत व चपलता को जोड़ती है।

दौड़ने के बाद हम एक पैर से निकलते हैं और उस कूद दूरी के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। तीन परीक्षण स्वीकार किये जाते हैं और उनमें से सर्वश्रेष्ठ को अपनाया जाता है। ट्रिपल जम्प के साथ एक समूह के रूप में दूरी के लिए कूदने वाली दो घटनाओं को क्षैतिज कूद कहा जाता है।

दुनिया में पुरुष रिकार्ड–माइक पावेल– 8.95 मीटर 1991

महिला रिकार्ड– गेलिना चित्यकोवा–7.52 मीटर 1988

ओलम्पिक में पुरूष– बॉब बी मोन– 8.90 मीटर 1968

महिला–जैकी जोयनर–7.40 मीटर 1988

ऊँची कूद

ऊँची कूद या हाई जम्प बहुत ही उत्साहजनक खेल माना जाता है। ओलम्पिक में यह 1896 से पुरूषों के लिए व 1928 से महिलाओं के लिए प्रारम्भ हुआ। हर खिलाड़ी को एक निश्चित ऊँचाई पर लम्बी बाधा को कूदकर पार करना होता है। इसके लिए हर खिलाड़ी को तीन अवसर मिलते हैं। जो खिलाड़ी सफल होते हैं उनके लिए उस बाधा की ऊँचाई क्रमिक बढाई जाती है। ऐसा तब तक होता है, जब तक एक खिलाड़ी बचता है। बाधा से दूरी का भी ख्याल रखा जाता है क्योंकि कम या ज्यादा दूरी से बाधा से टकरा भी सकते हैं।

बिन्दू शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
पाठशाला संख्या–35,
नगर क्षेत्र–अलीगढ़,
जनपद–अलीगढ़

सम्मानित किए गए लॉकडाउन के कप्तान

जनपद में बड़े ही उत्साह के साथ संपन्न हुआ ऑनलाइन अभिभावक सम्मान समारोह

दिनांक 25/7/2020 को जनपद में अभिभावक सम्मान समारोह का ऑनलाइन आयोजन लॉकडाउन के कप्तान के रूप में किया गया। इस कार्यक्रम में जनपद के विद्यालयों से जुड़े उन समस्त अभिभावकों को ऑनलाइन प्रमाण देकर सम्मानित किया गया जिन्होंने पूरे लॉकडाउन के दौरान मिशन शिक्षण संवाद के नेतृत्व में प्रेषित पाठ्य सामग्री को बच्चों एवं पास–पड़ोस तक पहुँचाने एवं उनको शिक्षा से जोड़े रखने में मदद की। कोविड –19 महामारी के दौरान लॉकडाउन के चलते बच्चों का शिक्षण कार्य बाधित ना हो इसके लिए सरकार द्वारा ऑनलाइन क्लासेस चलाई गईं, ऑनलाइन क्लासेस बिना अभिभावकों के सम्भव ना थीं, अभिभावकों का पूरा सहयोग मिले इसके लिए उनमें से कप्तान चुने गए। अभिभावकों के इस सहयोग को उनके प्रति आभार सम्मान पत्र से विभूषित कर व्यक्त किया गया।

मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी परिवार द्वारा सभी को प्रमाणपत्र– वितरित किया गया। जनपद के सभी अभिभावकों ने मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी परिवार के समस्त शिक्षकों की भूरि–भूरि प्रशंसा की और अपना सहयोग इसी तरह से देते रहने का विश्वास भी दिलाया।

इस कार्यक्रम में जनपद के कई विद्यालयों ने प्रतिभाग कर अपने अभिभावकों के प्रति आभार प्रकट किया। जिनमें प्राथमिक विद्यालय चायल से जूली दास, आनंद कुमार रघुनाथ द्विवेदी, यूपीएस कंथुवा कड़ा से रणविजय निषाद, प्राथमिक ग्रामीण भरवारी मूरतगंज से ऋचा शर्मा।

प्राथमिक विद्यालय भगवान पुर नेवादा से सुमन कुशवाहा। प्राथमिक मवई केवट सिराथू से अवनीश मिश्र। पूर्व माध्यमिक विद्यालय ख्वाजकीमई, कड़ा से आनंद नारायण पाठक। यूपीएस औरेनी कड़ा कौशाम्बी देवेंद्र अग्रहरि।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मिशन शिक्षण संवाद
CERTIFICATE
OF ACHIEVEMENT
प्रमाणित किया जाता है कि श्री /श्रीमती.....हरिश्चन्द्र........
पता.ग्रामीण.भरवारी में लॉकडाउन के दौरान अपने एवं आस पास के बच्चों तक शिक्षा के अभियान को अनवरत जारी रखा।
आपको "लॉकडाउन के कप्तान "की उपाधि से विभूषित करते हुए संस्था गर्व महसूस कर रही है।
हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।
प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण भरवारी
ब्लॉक मूरतगंज कौशांबी
दिनांक: 25/08/2020
Richa sharma
कक्षा अध्यापिका
Jay Chandra
प्रधानाध्यापक

सम्मानित किए गए अभिभावक

चायल में मिशन शिक्षण संवाद के बैनर तले सम्मान समारोह आयोजित

न्यूज संवाद एजेंसी

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अभिवावक को दिया गया सम्मान पत्र। *अमर उजाला*

चायल। लॉकडाउन के चलते परिषदीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के शिक्षण कार्य बाधित न हो, इसके लिए आनलाइन कक्षाएं चलाई गईं। ऑनलाइन कक्षाएं बिना अभिभावकों के संभव नहीं थी। परिषदीय विद्यालयों से जुड़े जिन अभिभावकों ने अब तक इस मिशन में सहयोग किया है उनके सम्मान में शनिवार को चायल प्राथमिक विद्यालय में तैनात सहायक अध्यापक रघुनाथ द्विवेदी व आनंद कुमार ने मिशन शिक्षण संवाद के बैनर तले अभिवावक सम्मान समारोह आयोजित किया। बच्चों की शिक्षा को लेकर जागरूक अभिवावकों को ऑनलाइन सम्मान पत्र देकर आभार व्यक्त किया गया। चायल से शुरू हुई इस मुहिम में जनपद के कुल 29 विद्यालयों ने भाग लिया। सौ से ज्यादा अभिवावकों को लॉकडाउन के कप्तान नामक सम्मान पत्र दिया गया। कुछ विद्यालय के शिक्षकों ने अभिवावकों को विद्यालय में मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी द्वारा प्रमाणपत्र वितरित किया। कार्यक्रम में जनपद के कई विद्यालयों ने प्रतिभाग कर अपने अभिभावकों के प्रति आभार प्रकट किया। जिनमें सिराथू ब्लॉक से जानकीपुर प्राथमिक विद्यालय की शालिनी सिंह, चायल से जूली दास, चरवा से प्रियंका सिंह, कुवंडीह मंझनपुर से प्रियदर्शिनी, कड़ा से श्रेया द्विवेदी, कशिया द्वितीय से ज्योत्सना सिंह, अमिरसा से अनुराधा पांडेय समेत कई विद्यालय के अध्यापकों ने सहभाग किया। इस दौरान साक़िबा, हरी लाल, रमेश चंद्र, नंदलाल शुक्ल, अरीशा खातून, तेरस लाल, मिथिलेश सोनी, राकेश पांडेय, पवन आदि सम्मानित हुए।

जनपद में बड़े ही उत्साह के साथ संपन्न हुआ ऑनलाइन अभिभावक सम्मान समारोह

ब्यूरो कौशांबी ! कौशांबी जनपद में अभिभावक सम्मान समारोह का ऑनलाइन आयोजन लॉक डाउन के कप्तान के रूप में किया गया। इस कार्यक्रम में जनपद के विद्यालयों से जुड़े उन समस्त अभिभावकों को ऑनलाइन प्रमाण देकर सम्मानित किया गया जिन्होंने पूरे लॉक डाउन के दौरान मिशन शिक्षण संवाद के नेतृत्व में प्रेषित पाठ्य सामग्री को बच्चों एवं पास पड़ोस तक पहुचाने एवं उनको शिक्षा से जोड़े रखने में मदद की। कोविड -19 महामारी के दौरान लाकडाउन के चलते बच्चों के शिक्षण कार्य बाधित ना हो इसके लिए सरकार द्वारा आनलाइन क्लासेस चलाई गई , आनलाइन क्लासेस बिना अभिभावकों के सम्भव ना थी , अभिभावकों का पूरा सहयोग मिले इसके लिए उनमें से कप्तान चुने गए,अभिभावकों के इस सहयोग को उनके प्रति आभार सम्मान पत्र से विभूषित कर व्यक्त किया गया।

मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी परिवार द्वारा सभी को प्रमाणपत्र वितरित किया गया। जनपद के सभी अभिभावकों ने मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी परिवार के समस्त शिक्षको की भूरि भूरि प्रशंसा की गयी और अपना सहयोग इसी तरह से देते रहने का विश्वास भी दिलाया।

इस कार्यक्रम में जनपद के कई विद्यालयों ने प्रतिभाग कर अपने अभिभावकों के प्रति आभार प्रकट किया। जिनमे प्राथमिक विद्यालय चायल से जूली दास, आनंद कुमार रघुनाथ द्विवेदी यूपीएस कंथुवा कड़ा से रणविजय निषाद प्राथमिक ग्रामीण भरवारी मूरतगंज से ऋचा शर्मा। प्राथमिक विद्यालय भगवान पुर नेवादा से सुमन कुशवाहा। प्राथमिक मवई केवट सिराथू से अवनीश मिश्र। पूर्व माध्यमिक विद्यालय ख़्वाजकीमई कड़ा से आनंद नारायण पाठक। यूपीएस औरेनी कड़ा कौशाम्बी देवेंद्र अग्रहरि। प्राथमिक विद्यालय लोही नेवादा कौशाम्बी से शैलेश पांडेय। प्राथमिक विद्यालय जानकीपुर सिराथू से शालिनी सिंह। कम्पोजिट विद्यालय रोही मूरतगंज से प्रीति शाक्य कम्पोजिट विद्यालय रसूलाबाद चायल से शालिनी कुशवाहा।.प्राथमिक विद्यालय सिरियावां कला मूरतगंज कौशाम्बी से शांति भारतीय प्राथमिक विद्यालय थाम्बा मंझनपुर से सत्येंद्र सिंह। यूपीएस दलेलागंज सरसवां से ओमप्रकाश। प्राथमिक विद्यालय मोहम्मदपुर चायल मीना वर्मा,सुषमा गुप्ता,आशु गुप्ता। यूपीएस कमालपुर चायल सीता भारतीय। कम्पोजिट विद्यालय कुवाडीह मंझनपुर से प्रियदर्शिनी तिवारी। प्राथमिक विद्यालय टेंवा प्रथम मंझनपुर से अजय श्रीवास्तव। प्राथमिक विद्यालय अरई सुमेरपुर से निकिता केशरवानी

कम्पोजिट विद्यालय महमूदपुर मनौरी से सुधा सिंह, अर्चना सिंह,अनुराधा गुप्ता।.प्राथमिक विद्यालय देवीगंज कड़ा से श्रेया द्विवेदी। प्राथमिक विद्यालय तिलगोड़ी नेवादा से रामनेवाज सिंह। प्राथमिक विद्यालय चिल्ला शहबाज़ी चायल से अंजली शर्मा, शिप्रा गुप्ता। यूपीएस बैगवां फतेहपुर से अजय पांडेय। प्राथमिक विद्यालय गिरिया

खालसा चायल से छाया प्रकाश। यूपीएस अगियौना मंझनपुर सेपूजा पांडेय यूपीएस चिल्ला शहबाज़ी चायल से पूनम सिंह यूपीएस काशिया द्वितीय मूरतगंज से ज्योत्सन सिंह प्राथमिक विद्यालय नादिर अली से दिलीप वर्मा के साथ लगभग 50 से ज्यादा शिक्षकों ने प्रतिभग किया और सैकड़ो अभिभावकों को सम्मानित किया गया। जिनमे साक़िबा,हरी लाल,समशेर सिंह,बद्रीप्रसादरमेश चंद्र,नंद लाल शुक्ल, बब्बन,अरीशा खातून,अर्जुन लाल,राम सिंह,मिथलेश सोनी,सुनीता देवी आदि थे।

प्राथमिक विद्यालय लोही नेवादा कौशाम्बी से शैलेश पांडेय। प्राथमिक विद्यालय जानकीपुर सिराथू से शालिनी सिंह। कम्पोजिट विद्यालय रोही मूरतगंज से प्रीति शाक्य कम्पोजिट विद्यालय रसूलाबाद चायल से शालिनी कुशवाहा। प्राथमिक विद्यालय सिरियावां कला मूरतगंज कौशाम्बी से शांति भारतीय प्राथमिक विद्यालय थाम्बा मंझनपुर से सत्येंद्र सिंह। यूपीएस दलेलागंज सरसवां से ओमप्रकाश। प्राथमिक विद्यालय मोहम्मदपुर चायल मीना वर्मा, सुषमा गुप्ता, आशु गुप्ता। यूपीएस कमालपुर चायल सीता भारतीय। कम्पोजिट विद्यालय कुवाडीह मंझनपुर से प्रियदर्शिनी तिवारी। प्राथमिक विद्यालय टेंवा प्रथम मंझनपुर से अजय श्रीवास्तव। प्राथमिक विद्यालय अरई सुमेरपुर से निकिता केशरवानी, कम्पोजिट विद्यालय महमूदपुर मनौरी से सुधा सिंह, अर्चना सिंह, अनुराधा गुप्ता। प्राथमिक विद्यालय देवीगंज कड़ा से श्रेया द्विवेदी। प्राथमिक विद्यालय तिलगोड़ी नेवादा से रामनेवाज सिंह। प्राथमिक विद्यालय चिल्ला शहबाजी चायल से अंजली शर्मा, शिप्रा गुप्ता। यूपीएस बैगवां फतेहपुर से अजय पांडेय। प्राथमिक विद्यालय गिरिया खालसा चायल से छाया प्रकाश।

यूपीएस अगियौना मंझनपुर से पूजा पांडेय, यूपीएस चिल्ला शहबाजी चायल से पूनम सिंह, यूपीएस काशिया द्वितीय मूरतगंज से ज्योत्स्ना सिंह, प्राथमिक विद्यालय नादिर अली से दिलीप वर्मा के साथ लगभग 50 से ज्यादा शिक्षकों ने प्रतिभाग किया और सैकड़ों अभिभावकों को सम्मानित किया गया। जिनमे साकिबा, हरी लाल, समशेर सिंह, बद्रीप्रसाद, रमेश चंद्र,नंद लाल शुक्ल, बब्बन, अरीशा खातून, अर्जुन लाल, राम सिंह, मिथलेश सोनी, सुनीता देवी आदि रहे।

लॉकडाउन कप्तान के नवाचारक

रघुनाथ द्विवेदी, आनन्द कुमार विकास खण्ड चायल एवं समस्त जनपद टीम मिशन शिक्षण संवाद कौशाम्बी।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात